Jain New Year

• श्रमणाचार्य विमर्शसागर

हम गौरवान्वित हैं जो जैनकुल में हमारा जन्म हुआ। जैनधर्म कोई प्राचीन-अर्वाचीन नहीं है, जैनधर्म तो अनादि अनिधन है, शाश्वत है। हमें अपनी जैन संस्कृति पर गौरव होना चाहिये। वर्तमान में हम आधुनिकता के इतने दास बन चुके हैं कि हमारी अनादि अनिधन शाश्वत संस्कृति विस्मृत सी हो चली है। हम एक जनवरी को ईशामसीह की स्मृति में चलाये गये 'न्यू ईयर' (New Year) को तो भारी हर्षोल्लास से मनाते हैं। पर हम भूल चुके हैं कि हमारे वर्तमान शासन नायक विश्वगुरु भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव की स्मृति में भी जैन संस्कृति में एक संवत् चलता है। जिसे हम वीर निर्वाण संवत् कहते हैं। कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन भगवान महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया था, जिसे हम दीपावली पर्व के रूप में मनाते हैं। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के अगले दिन से अर्थात् कार्तिक सुदी एकम् से यह 'वीर निर्वाण संवत्' प्रारंभ हुआ था। जो अनवरत रूप से सम्प्रति काल तक प्रवर्त रहा है। वीर निर्वाण संवत्, पूरी दुनिया में विभिन्न धर्मों के महापुरुषों के नाम पर चलने वाले सम्प्रतिकाल में जितने भी संवत् हैं उन सबसे प्राचीन है। वर्तमान में हिजरी, विक्रम, शक्, गुप्त आदि अनेक संवत् प्रचलन में हैं। जिनमें सर्वाधिक प्राचीन वीर निर्वाण संवत् है। इसकी पुष्टी आमेर म्यूजियम में रखे एक प्राचीन शिलालेख से भी होती है। साथ ही भारतीय साहित्य मनीषा भी इसके प्रमाणों से पुष्ट है।

1. **वीर निर्वाण संवत्**– भगवान महावीर के निर्वाण होने के अगले दिन से अर्थात् कार्तिक सुदी एकम् से प्रारंभ हुआ।

2. **विक्रम संवत्**– यह संवत् राजा विक्रम से संबंधित है एवं महावीर निर्वाण के 470 वर्ष बाद प्रारंभ हुआ।

3. **शक् संवत्**– यद्यपि यह संवत् वर्तमान में प्रचलन में नहीं है, किन्तु इतिहास के परिप्रेक्ष्य में यह ज्ञात होता है कि यह संवत् कभी दक्षिण देश में प्रचलित था।

यह संवत् भृत्यवंशी गौतमी पुत्र राजा सातकर्णी शालीवाहन ने शुरु किया था जो कि भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के 605 वर्ष बाद शुरु हुआ।

4. शालीवाहन संवत्– यह संवत् भी वर्तमान में प्रचलन में नहीं है, यह किसी समय दक्षिण देश में प्रचलन में था। यह भगवान महावीर के निर्वाण के 741 वर्ष पश्चात् प्रारंभ हुआ।

5. ईस्वी संवत्– यह संवत् ईशामसीह के मरण उपरान्त यूरोप में प्रचलित हुआ। यह अंग्रेजी साम्राज्य के मध्य सारी दुनिया में फैला। यह भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के 725 वर्ष पश्चात् प्रारंभ हुआ।

6. गुप्त संवत् – इस संवत् की स्थापना गुप्त साम्राज्य के प्रथम सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने राज्याभिषेक के समय की थी। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के 846 वर्ष बाद यह संवत् प्रारंभ हुआ।

7. हिजरी संवत् – यह संवत् पैगम्बर मोहम्मद साहब के मक्का से मदीना जाने के समय से उनकी हिजरत में वीर निर्वाण के 1120 वर्ष बाद स्थापित हुआ। इसी को मुहर्रम या शवान सन् भी कहते हैं।

8. मघा संवत् – यह संवत् भगवान महावीर के निर्वाण के 1003 वर्ष पश्चात् प्रारंभ हुआ था। इस संवत्सर का प्रयोग कहीं भी देखने में नहीं आता। मात्र महापुराण 76-399 से सिद्ध होता है।

हमारा जैन नववर्ष अर्थात् वीर निर्वाण संवत् (कार्तिक सुदी एकम्) है। हमें अपने इस संवत् पर गर्व होना चाहिये। घर-घर में जैन नववर्ष की खुशियाँ मनाई जानी चाहिये। प्रतिवर्ष-इस दिन अपने घर की देहरी पर एक दीप अवश्य जलायें, रंगोलियाँ सजायें, खुशी भरे शुभकामनाओं से सजे ग्रीटिंग एवं मोबाईल पर जैन नववर्ष (Jain New Year) की बधाईयाँ प्रेषित करें। सभी को बतायें कि आज से हमारा नववर्ष प्रारंभ हो रहा है। अपने जैनत्व का बहुमान करें, गौरव करें, सम्मान करें। आप सभी को जैन नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें एवं ढेर सारा आशीष।

'जयदु जिणागम पंथो।'

'जिनागम पंथ जयवंत हो।'